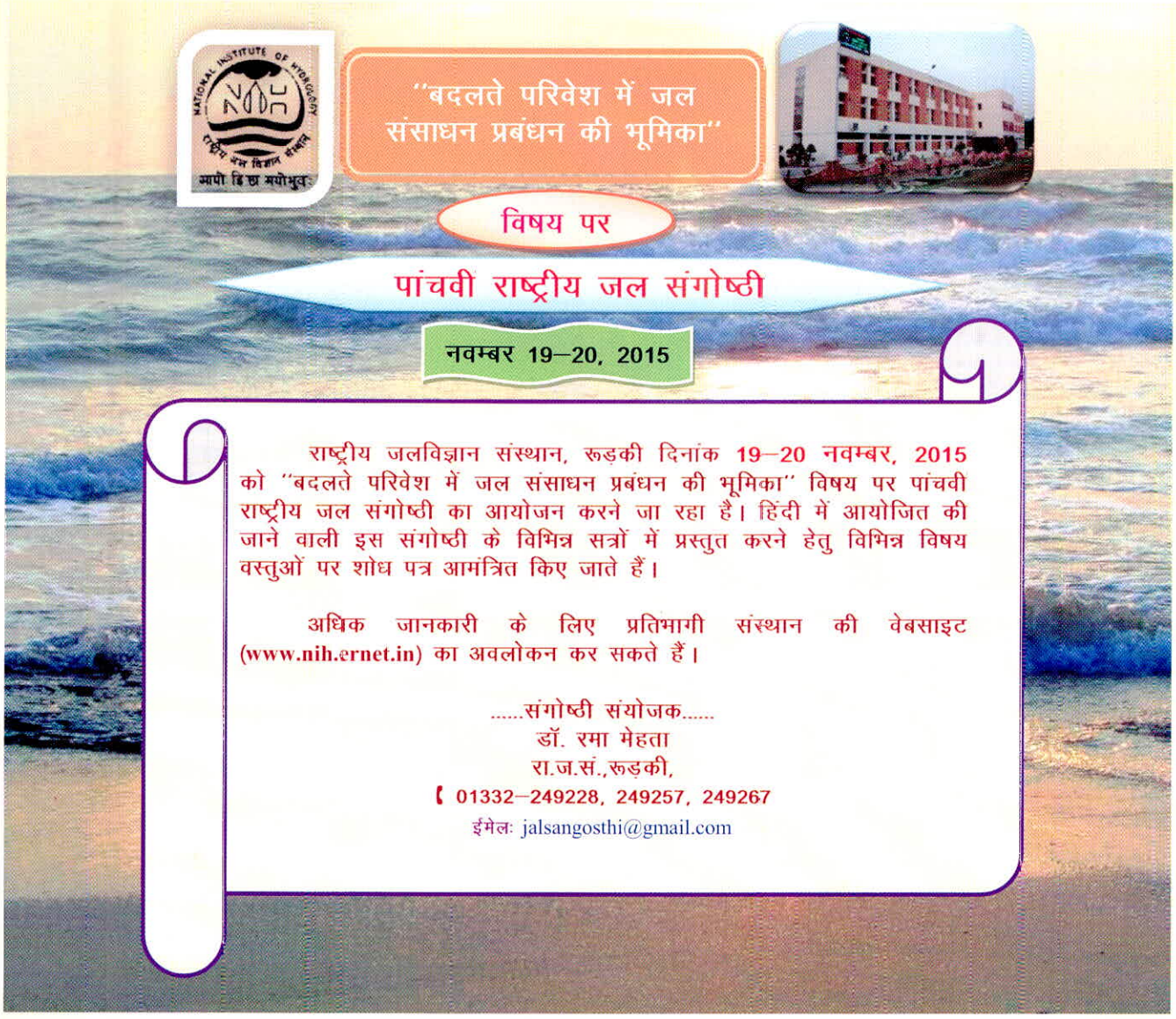

पानी की ग़ज़ल

रिस-रिस कर बहता पानी,
भूतल में रहता है पानी ।

निर्झर, नाले, खाले, सरिता,
सब में ही बहता है पानी ।

आंसू, वर्षा, ओस, पसीना,
रूप कई गहता है पानी।

कूड़ा, कचरा, कीचड़ बदबू,
कितना-कुछ सहता है पानी ।

सहज-सरल बन रहना सीखो,
बात यही कहता है पानी ।

पानी जीवन जीव-जगत् का,
सार यही कहता है पानी ।

पानी है, तो जग-जीवन है,
इसीलिए बहता है पानी ।

पेड़ों की गज़ल

जीवन का सामान पेड़ हैं ।
विधना का वरदान पेड़ हैं ।

पात, फूल, फल, ईंधन देते,
धन-दौलत की खान पेड़ हैं ।

सब रौनक़-हरियाली इनसे,
सचमुच जग की शान पेड़ हैं ।

इनसे बादल, इनसे वर्षा,
सर्जन का विज्ञान पेड़ हैं ।

देते हैं ममता की छाया,
लगते पिता समान पेड़ हैं ।

औरों के हित जीवन जीते,
सच्चे मेहरबान पेड़ हैं।

पत्थर खाकर भी फल देते,
कितने धीरजवान पेड़ हैं ।

आओ, मिलकर इनको पूजें,
धरती के भगवान पेड़ हैं ।

संपर्क करें :
डॉ. रामनिवास 'मानव', डी. लिट्
''अनुकृति' 706, सैक्टर-13 हिसार-125005 (हरि.); फोन न. - 01662-238720